# ७६. जीवन ज्ञान

आज दिनांक **०५ मार्च २०१३ का दिन मंगलवार**

विकल्प विधि से जीवन ज्ञान सफल होता है | जीवन का नाम काफी विगत से अथवा सुदूर विगत से मानव परम्परा में प्रयोग हुआ है | प्रकारांतर से हर समुदाय में अभ्यस्त भाषा में उपयोग हुआ है | अभी तक किसी परम्परा में मानवीयता का प्रमाण प्रस्तुत हुआ हो, ऐसा देखने को नहीं मिलता है | अपेक्षा बना रहा | सभी समुदाय में उपयोग किया गया, प्रयोग किया गया, अभ्यास किया गया विधियों से मानव को मानव चेतना का ज्ञान सम्पन्नता नहीं हो पाया | विकल्प विधि से ही यह पूरा समझ में आता है | मानव आदिकाल से मानवीयता की अपेक्षा में प्रकारांतर से है | "प्रकारांतर से" का तात्पर्य कोई किसी प्रकार से, कोई किसी प्रकार का मानवीयता का मानता आया है, मानवीयता मिला नहीं | उसका गवाही यही है कि धरती पर १०० से अधिक सुप्रीम कोर्ट हुआ | एक भी समुदाय संगत कोर्ट में मानवीयता, मानव को प्राप्त हुआ हो ऐसा देखने को नहीं मिला | अभी तक सभी सुप्रीम कोर्ट फैसला को न्याय मानता है | फैसला के पीछे क्या ऐसा मानने का आधार है पूछा? उसका उत्तर विकल्प विधि से यही मिला कि बन्दूक, बारूद, फांसी, यंत्रणा है | इसी आधार पर फैसला की मान्यता है | इस ढंग से कैसा न्याय हुआ? न्याय तो उभय पक्ष की स्वीकृति से ही होता है | यह मानवीयता के आधार पर ही होता है अथवा विकसित चेतना की विधि से ही होता है |

विकसित चेतना का स्वरूप मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना का संयुक्त स्वरूप है | अविभाज्य चेतना है | इस आधार पर सोचा जाय तो अभी तक अपने को मानवीयता नहीं मिला | विकसित चेतना विधि से ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के स्वरूप में अविभाज्य विधि से वर्तमान होता है | इसे अभ्यास कर देखा गया है | अर्थात इसको आचरण में लाकर के देखा गया है, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के अविभाज्य स्वरूप को | मानव चेतना में नियम पूर्वक जीना अर्थात स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार जीना बनता है | यह न्याय पूर्वक आशा बंधन से मुक्ति से ही होता है | देव चेतना में नियम नियंत्रण संतुलन न्याय धर्म सत्य पूर्वक विचार मूलक व्यवहार करना बन जाता है | यह सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक जीना विचार बंधन से मुक्ति से होता है | दिव्य चेतना में समाधान, समृद्धि, अभय,सह-अस्तित्व प्रमाणित होता है | यह सत्य पूर्वक जीना इच्छा बंधन से मुक्ति का अंतिम प्रमाण है | इस ढंग से तीनों चेतना न्याय धर्म सत्य संगत हैं | यह सब परिवारमूलक व्यवस्था, स्वराज्य व्यवस्था विधि से प्रमाणित होता है |

इसी के साथ दिव्य चेतना अनुभव मूलक विचार विधि का प्रमाण रूप में आता है | हर मानव विचार करता ही है- आबाल हो या वृद्ध | हर व्यक्ति को विचार सम्मत होना आवश्यक है | विचार, तर्क सम्मत होता है | अनुभवमूलक तर्क सर्वमानव को स्वीकृत होता है | तर्क संगत अर्थात ऐसा अनुभवमूलक तर्कसंगत व्यवहार में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार प्रमाणित होता है | इस ढंग से मानव चेतना अविभाज्य रूप में अनुभव संगत विधि से प्रमाणित होना देखा गया है | सर्वप्रथम अध्ययन पूर्वक मानव चेतना को विकसित चेतना के रूप में पहचानने का ज्ञान, यही अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होता है | इसी क्रम में देव चेतना सहज ज्ञान और प्रमाण तथा दिव्य चेतना भी अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होना होता है | इसी आधार पर विकल्प को प्रस्तुत किया है | इसी की आवश्यकता मानव परम्परा में बना हुआ है | ऐसी मेरी मान्यता है | हर

व्यक्ति इसको सोच सकते हैं | चाहे बड़ा हो या छोटा हो आयु से | इसी क्रम से ही न्याय पा सकते हैं | दूसरा कोई विधि दिखती नहीं | यद्यपि मानव के आधार पर विचार, व्यवहार, अनुभव तीनों भाग मौलिक हैं | मानवीयतापूर्ण आचरण मानव का मौलिकता है | मानवीयतापूर्ण आचरण ही उक्त तीनों प्रकार के चेतना से प्रमाणित होता है | अनुभव क्रम में मानवीयतापूर्ण आचरण का ज्ञान एवं अधिकार होना तथा अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होना | यही न्याय कहलाता है | अनुभवमूलक विधि से सहमत होने से, अनुभवमूलक विचार से सहमत होने से, अनुभवमूलक आचरण, व्यवहार से सहमत होने से परस्परता में सहमत हो पाते हैं | क्या बात है! ऐसी ही सहमति स्वयं में न्याय कहलाती है | यह तर्क संगत, व्यवहार संगत,अनुभव संगत होने के आधार पर सार्वभौम होने का सम्भावना है |

इसी आशय से विकल्प को प्रस्तुत किया है | मानव जात चाहे ज्ञानी हो, विज्ञानी हो, अज्ञानी हो- तीनों सोच कर सहमति देना है | यह एक आवश्यकता है | और सहमत होने से ही मानव चेतना है | मानव चेतना का स्वरूप ऊपर कहे के अनुसार तीनों प्रकार से प्रमाणित होने से ही है | प्रमाणित होना अविभाज्य है | भाग-विभाग हो नहीं सकता क्योंकि अनुभव सम्मत सम्पन्न होने के पश्चात ही तर्क संगत होता है | अनुभव संगत होते तक तर्क संगत होना होता नहीं है | तर्क बना ही रहता है | भ्रमित मानव तक परधन, परनारी/परपुरुष, परपीड़ा के रूप में प्रमाणित होता है;जो अभी तक वर्तमान रहा है | केवल तर्क समाधान को प्राप्त कर नहीं सकता | ये वर्तमान तक हुआ है | जीवन विद्या के अनुयायियों में भी यह संभावना रखा ही है | जबकि, तर्क विवेक संगत होना, ज्ञान संगत होना, अनुभव संगत होना आवश्यक हो गया है | मानव को कम से कम समझदारी पूर्वक जीना आवश्यक है | बोध का ही दूसरा नाम समझदारी है | बोध, अस्तित्व में यथार्थता वास्तविकता सत्यता के ही होता, दुसरे किसी चीज का होता ही नहीं | यदि कोई कहता है कि समझदारी के बिना विचार से ठीक होता है, कोई कहता है विचार के बिना कार्य से ठीक होता है, कोई कहता है कार्य, व्यवहार, विचार के बिना व्यवहार होता है | यह सब गलती का आधार है | अपराध स्वीकार होने का आधार है | अपराध और गलतियाँ मानवता का आधार नहीं होता है |

मानवता का आधार न्याय, समाधान,सत्य ही होता है | यह मानवीयता के रूप में आचरण में होता है | यही अनुभवमूलक प्रमाण समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में प्रमाणित होता है, जो स्वयं अनुभव सम्मत विचार समाधान रूप में प्रमाणित है | अनुभव सम्मत विचार सहज रूप में स्वधन,स्वनारी/स्वपुरुष,दयापूर्ण कार्य-व्यवहार प्रमाणित होता है | यही न्याय प्रमाणित होने का आधार है | यह मानव परम्परा में जब तक सम्भव नहीं हुआ तब तक न्याय नहीं हो सकता | जबकि न्यायपूर्वक जीना चाहता है हर मानव | सत्य सहज प्रमाण के रूप में जीना चाहता है हर मानव | इसको अच्छी तरह से अध्ययन करके देखा है | तभी विकल्प के रूप में अध्ययन के स्वरूप में प्रस्तुत किया है | इस क्रम में मानव परम्परा सार्वभौम अखण्ड होना स्वाभाविक है | अर्थात विकसित चेतना का ज्ञान, आचरण एवं प्रमाण मानव के लिए अनिवार्य स्थिति है |

दूसरा कोई विधि नहीं है अखण्ड समाज होने का, दूसरा कोई विधि नहीं है सार्वभौम व्यवस्था होने का | सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप ही परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था है | परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था विधि से ही विकसित चेतना मानव परम्परा में परम्परा के रूप में होता है | और कोई परम्परा के रूप में न्याय आ जाय, ऐसा कोई रास्ता नहीं है | शोध, अध्ययन करने का सभी व्यक्ति का अधिकार है | साथ में अनुसंधान करने का भी सर्वमानव के साथ अधिकार है |

इसमें कोई आय प्रधान नहीं है | धन प्रधान नहीं है | यह मजमा जमाने से होता नहीं | ये तीनों कार्य आदमी कर चुका है | इस क्रम में चलकर अर्थात विकल्प को छोडकर न्याय पाना सम्भव नहीं है | इसी निष्कर्ष के आधार पर हमारा न्यायिक होने का स्वरूप, प्रयोजन, आवश्यकता अध्ययनगम्य होता है | विकल्प विधि से ही इसी क्रम में हम मानव जात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों जात न्यायपूर्वक जीना चाहते हैं | यह सफल होता है | न्यायपूर्वक जीना ही मानव परम्परा का मर्यादा है, अपेक्षा हैऔर सार्थक है | जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**